ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-8* September- 2017
Innovation The Research Concept

दर्शनशास्त्र की उपयोगिता के विभिन्न आयाम

सारांश

दर्शनशास्त्र एक ऐसे ज्ञान का विषय है, जिसमें सभी विषयों के आधार मिलते है। ज्ञान का निर्माण एवं उसका उपयोग करने की आगमन एवं निगमन विधि दर्शनशास्त्र की ही देन है। दर्शनशास्त्र केवल ज्ञान की विधियों को ही नहीं प्रदान करता, अपितु ज्ञानमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा, समाज दर्शन, धर्म दर्शन, तर्कशास्त्र जैसी ज्ञान की शाखायें भी प्रदान करता है, जो धर्म, समाज, राज्य की व्यवस्था के निर्माण में मुख्य होती है। दर्शनशास्त्र की इन शाखाओं में ही मानव जीवन जीने के समस्त तरीके एवं मार्ग भी समाहित हैं। दर्शनशास्त्र की ये शाखयें ही हमें बताती है कि मानव का आदर्श जीवन कैसा होना चाहिये, मानव का चरित्र कैसा होना चाहिये, एक आदर्श समाज कैसा होना चाहिये। मानव एवं समाज के मूल्यों एवं आदर्शों की खोज करना दर्शनशास्त्र का ही मुख्य कार्य है। अतः दर्शनशास्त्र मूल्यात्मक एवं आदर्शात्मक विषय कहलाता है। मानविकी, समाजविज्ञान, विज्ञान आदि सभी विषयों की आत्मा दर्शनशास्त्र को कहा जा सकता है।

मुख्य शब्द : आगमन, निगमन, दर्शनशास्त्र, ज्ञानमीमांसा, आचारमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, समाज–दर्शन, धर्म–दर्शन, तर्कशास्त्र, उपयोगिता, आयाम, विधियाँ।

पिताम्बर दास
असिस्टेंट प्रोफेसर,
दर्शनशास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी

प्रस्तावना

दर्शनशास्त्र एक ऐसा विषय है, जिस पर हम जब सम्पूर्ण दृष्टि से विचार करते है, तो पाते है कि यह विषय अध्ययन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में प्रायः सभी विषयों को भूमि प्रदान करता हुआ दिखाई देता है, जैसे सभी विषयों को अपने अध्ययन एवं अनुसंधान में निगमन, आगमन, विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक, तुलनात्मक जैसी प्रविधियों की सहायता लेनी पड़ती है और ये विधियाँ दर्शनशास्त्र की मुख्य विधियाँ होती है। अतः हम स्पष्ट रूप से यह कह सकतें है कि सभी विषय अपने अध्ययन एवं अनुसंधान में दर्शनशास्त्र की इन विधियाँ के बिना अपना अध्ययन एवं अनुसंधान आगे नहीं बढ़ा सकते। विज्ञान के लिये तो दर्शनशास्त्र एक मार्गदाता के रूप में खड़ा हुआ मिलता है, क्योंकि विज्ञान लौकिक एवं पारलौकिक जगत् के तथ्यों पर जो भी अनुसंधान एवं प्रयोग करता है, उनके सभी विचार एवं प्रत्यय दार्शनिको के मस्तिष्क की ही उपज होते है। जैसे विज्ञान ने परमाणुओं के विभिन प्रकारों की खोज की जिससे सूक्ष्म से अति सूक्ष्म तकनीक संभव हो पाई, परन्तु इन परमाणुओं के मूल विचार पहले से ही हमारे भारतीय दर्शन के वैशेषिक दार्शनिक सम्प्रदाय में मिलते है और हमारे यहां का वैदिक दर्शन तो इतना धनाढ़य है कि इसमें आधुनिक विज्ञान के सभी मूल आधार मिलते है। यदि धर्म की बात की जाये तो विश्व के सभी धर्मशास्त्रों के मूल आधार अर्थात् नैतिक नियमों के सभी रूप भारत की आस्तिक एवं नास्तिक परम्परा में देखनें को मिलते है। इन्हीं नैतिक नियमों के बल पर विश्व के सभी धर्म अपने–अपने धर्मशास्त्रों का महल खड़ा करते है। चिकित्सा के क्षेत्र की बात की जाये तो भारतीय दर्शन का आयुर्वेद विश्व की सभी प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों का मार्गदर्शक दिखाई देता है और जिन तकनीक एवं अनुसंधान के बल पर कुछ देश अपने को विकसित कहते है, उन तकनीक एवं अनुसंधान के बीज हमें हमारे वेदों में पहले से ही प्राप्त है, मगर अफसोस इस अज्ञानता का है कि हम प्राप्तस्य प्राप्ति का लगातार प्रयास कर रहे है। यही अज्ञानता भारत को विकासील देशों की श्रेणी में रखें हुए है, परन्तु विवेकानन्द एवं अब्दुल कलाम जैसे लोगों की सोच लिये हुए, मानव भारत भूमि पर अवश्य पैदा होंगे जो भारत को इस अज्ञानता से मुक्ति दिलायेंगे क्योंकि इन लोंगो में स्वामी विवेकानन्द जी ने वैदिक ज्ञान के आलोक में धर्म का पुनर्निर्माण करने का प्रयास किया और अब्दुल कलाम जी ने वैदिक ज्ञान के आलोक में विज्ञान एवं तकनीक का पुनर्निमाण करने का प्रयास किया। समाज एवं उसकी संरचना की बात की जाये तो डॉ0 भगवानदास, समाज सुधारको ने भी वैदिक ज्ञान के आलोक में ही

समाज की पुनर्रचना का प्रयास किया और वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था को उचित ठहराया, परन्तु बाबा साहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जैसे मनीषीयों का मानना था कि भारतीय समाज की व्यवस्था में जो भेद–भाव, छुआछूत, अस्पर्शयता जैसी समस्यायें पैदा हो गई है, उनको वैदिक ज्ञान के आलोक में ही प्राचीन काल से ही उचित ठहराया जाता रहा है, भले ही ये अमानवीय बातें वेदों में बाद में जोड़ी गई हो, परन्तु भारतीय स्मृतियां एवं संहितायें इस भेदभाव पूर्ण वर्णाश्रम व्यवस्था को प्रत्येक दृष्टि से उचित ठहराती है, डॉ0 अम्बेड़कर की दृष्टि में ऐसी भेदभाव पूर्ण व्यवस्था अमानवीय है। अतः समाज के पुनर्निर्माण के लिये वैदिक व्यवस्था से अलग हटकर हमें एक नवीन लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर विचार करना होगा। भारत के प्राचीन ज्ञान के स्रोतों में से लोकतान्त्रिक व्यवस्था के बीज तलाश करने होंगे और साथ ही विश्व के अन्य देशों की राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं का भी अध्ययन करके एक नवीन लोकतान्त्रिक सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था का पुनर्निर्माण करना होंगा।यदि दर्शनशास्त्र की विभिन्न शाखाओं अर्थात् तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, आचारमींमांसा, तर्कशास्त्र, धर्मदर्शन, सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन पर विचार किया जाये ंतो हम पाते है कि इन शाखाओं में ही मानव जीवन, समाज, राज्य, धर्म के मूल आधार मिलते हैं।

अध्यन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह बताना है कि दर्शनशास्त्र का नैतिक पक्ष हमें उचित–अनुचित, शुभ–अशुभ, अच्छा–बुरा, पाप–पुण्य के बारे में निश्चित मानदण्ड प्रदान करता है। यह ज्ञान मानव जीवन को सर्वोच्च शुभ की ओर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध होता है। दर्शनशास्त्र जीवन की आशा और निराशाओं का विवेचन करके आदमी को मानसिक संकट से बचाता है। इस प्रकार दर्शनशास्त्र अन्वेषण, समीक्षा या मूल्यांकन का एक प्रभावी साधन है। दर्शन और जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिसे प्रायः सभी समाजों एवं राष्ट्रों ने स्वीकार किया है। दर्शनशास्त्र एवं संस्कृति का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्राचीन तथा वर्तमान सभी देश अपने–अपने दार्शनिक दृष्टिकोणों से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा शासकीय जीवन को संचालित करते हैं। किसी भी देश का दर्शन उसके सांस्कृतिक विकास की उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करता है। नृत्य, कला, संगीत, साहित्य आदि का विकास स्वस्थ दार्शनिक दृष्टिकोण पर आधारित होता है। जैसे भारतीय दर्शन मूलतः आध्यात्मिक है, जिसका प्रभाव हमें देश के नृत्य, संगीत, साहित्य में स्पष्ट रूप से मिलता है। यहां का दर्शन संसार–भर में अपनी छाप छोड़े हुए है, जैसाकि हमें बौद्ध दर्शन के प्रभाव से ज्ञात है। दर्शन संस्कृति के विकास एवं परिवर्तन का परिचायक होता है। दर्शनशास्त्र इतिहास के विभिन्न पक्षों को भी प्रभावित करता है। दर्शन क्रिया में परिणित होकर किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति का निर्माण करता है। नैतिक दर्शन राष्ट्र की मूल्य व्यवस्था और धर्म दर्शन का दिग्दर्शन करने में योगदान करता है। भारत की उदार, समन्वयवादी, प्रजातान्त्रिक तथा धार्मिक उत्कृष्टता दर्शन के कारण ही है। पूरे संसार में भारतीय दर्शन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। वह आदमी के अन्तरमन को छूता है और दुःख तथा निराशा से मुक्ति दिलाने में मार्गदर्शन करता है। इसलिए कहा जाता है कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति दार्शनिक है। इसके अलावा कुछ ऐसे दर्शन भी हैं, जिन्होंने मानव इतिहास और संस्कृति को नया रूप प्रदान किया। जैसे, मार्क्सवादी दर्शन ने रूस तथा अन्य पूर्वी देशों के जन–जीवन को बदलने में एक मौलिक भूमिका अदा की, जिसका प्रभाव प्रायः सभी देशों में पाया जाता है। भारत में भी मार्क्सवाद का बहुत प्रभाव है, जो हमें यहाँ के सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में भली–भाँति दृष्टिगत होता है। पाश्चात्य देशों में पूँजीवादी दार्शनिक दृष्टिकोण व्यापक रूप में मिलता है, जो वहाँ की प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को पोषित करता है। मुस्लिम देशों में मुस्लिम दर्शन तथा धर्म प्रभावी है। इससे यह निष्कर्ष अवतरित हो सकता है कि, ''दर्शनशास्त्र का प्रभाव व्यक्ति तथा समाज के जीवन और विकास एवं उनकी सभ्यता तथा संस्कृति, उन्नति या अवनति पर गम्भीर तथा गहरा पड़ता है।

इस प्रकार मैं पूरे विश्वास के साथ यह कह सकता हँ कि दर्शनशास्त्र एक ऐसा विषय है, जिसकी उपयोगिता ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में है, क्योंकि यह विषय ही तो सभी विषयों का एकमात्र मार्गदर्शक है। यदि सभी विषयों के अध्ययन से पहले दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया जाये तो सभी विषय चाहे वे विज्ञान एवं तकनीक के हो, चाहे मानवीकी एवं समाज विज्ञान के हो सभी को सम्पूर्ण रूप से एवं गहराई में समझने के लिये, एकमात्र दर्शनशास्त्र ही वे विधियाँ प्रदान कर सकता है। अतः सभी विषयों के अध्ययन को प्रारम्भ करने से पहले अथवा अध्ययन समाप्त करने पर दर्शनशास्त्र का अध्ययन अवश्य कराना चाहिये और यहि कारण है कि आप किसी भी विषय का अध्ययन एवं अनुसंधान करे आपको उस विषय में सबसे बड़ी डिग्री अर्थात् पी–एच0 डी0 तो दर्शन की ही प्रदान की जाती है अर्थात् डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी। अतः पाश्चात्य जगत् के प्राचीन यूनानी दर्शन एवं पूर्वी जगत् के प्राचीन वैदिक दर्शन के अध्ययन एवं अनुसंधान का केन्द्रिय विषय दर्शनशास्त्र ही रहा है।

तत्त्वमीमांसा

यदि दर्शनशास्त्र की शाखा तत्त्वमीमांसा पर विचार किया जाये तो हम भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों दार्शनिकों के विचारों में पाते है कि सभी दार्शनिक सम्प्रदाय हमें सभी प्रकार की रूढ़ी, अन्धविश्वास, परम्परा से अलग हटकर तार्किक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से ईश्वर आत्मा एवं जगत् की विवेचना करते हुए, दिखाई देते है। सभी दार्शनिक हमें तार्किक सन्तुष्टि के बाद ही ईश्वर, आत्मा एवं जगत् जैसे तत्त्वों में विश्वास करने की शिक्षा देंते है। इससे स्पष्ट है कि यदि हम दर्शनशास्त्र की शाखा तत्त्वमीमांसा का निष्पक्ष अध्ययन करे तो हम सभी प्रकार के अन्धविश्वासों, रूढ़ी, परम्परा से अपने मस्तिष्क को मुक्त रख सकते है और तार्किक दृष्टि को प्राप्त कर सकते है। अतः किसी भी जड़ या चेतन पदार्थ को जानने एवं समझने अथवा सूक्ष्म अध्ययन करने के लिये हमें तत्त्वमीमांसा की विधियों का अध्ययन करने की आवश्कता पड़ती है। इस प्रकार दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप

में तत्त्वमीमांसा हमें सृष्टि के जड़ या चेतन पदार्थ का सूक्ष्म अथवा तात्त्विक अध्ययन कैसे किया जाये, इसकी शिक्षा देती है।

ज्ञानमीमांसा

दर्शनशास्त्र की अति महत्त्वपूर्ण शाखा ज्ञानमीमांसा के द्वारा हम आन्तरिक एवं वाह्य जगत् के ज्ञान को कैसे प्राप्त किया जाता है तथा यथार्थ एवं अयथार्थ ज्ञान क्या है, यथार्थ ज्ञान के साधन क्या है ? अयथार्थ ज्ञान क्या होता है ? आदि ज्ञान से संबंधित बातों को सीखते हैं। सामान्य दृष्टि से ज्ञान किसी भी प्रकार की नवीन जानकारी को कहा जाता है, जो हमें हमारी ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा प्राप्त होता है। दर्शनशास्त्र में ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान प्रत्यक्ष ज्ञान कहा जाता है, जिसके उतने ही प्रकार है, जितनी हमारी ज्ञानेन्द्रियां अर्थात् आख से प्राप्त होने वाला ज्ञान चक्षु प्रत्यक्ष, नाक से प्राप्त होने वाला नासिका प्रत्यक्ष, कान से प्राप्त होने वाला कर्ण प्रत्यक्ष, जीभ से प्राप्त होने वाला जीव्ह्या प्रत्यक्ष तथा त्वचा के द्वारा प्राप्त होने वाला त्वचा प्रत्यक्ष। इसके अलावा अप्रत्यक्ष या परोक्ष ज्ञान भी है, जिसकी प्राप्ति दर्शन की भाषा में हमें विभिन्न ज्ञान के साधनों अथवा प्रमाणों के द्वारा होती है, जिसकी विस्तार से चर्चा भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों दर्शनों में की जाती है, जिसमें ज्ञान के प्रमुख प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द की विस्तार से चर्चा हमें दर्शनों में मिलती है। ज्ञान का ऐसा सूक्ष्म विवेचन हमें यह शिक्षा देता है कि हम सही एवं यर्थाथ ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते है, साथ ही ज्ञान की ऐसी मीमांसा के द्वारा हम यह भी सीखते है कि यर्थाथ ज्ञान, ज्ञान के उपरोक्त साधनों के आधार पर ही होता है और हम एक सही निष्कर्ष प्राप्त कर पाते है, जिससे हमारा जीवन सरल हो जाता है। यदि हम ज्ञान प्राप्ति में उपरोक्त साधनों का सहारा न लेकर, किसी भी तरह से निष्कर्ष निकालकर उसको ही सही मानने लगे तो ऐसा निष्कर्ष के रूप में प्राप्त ज्ञान दर्शनशास्त्र की भाषा में अयथार्थ होगा और हम सामान्य जीवन में ऐसे ज्ञान के द्वारा भटक भी सकते है अथवा गलत बातों को बढ़ावा भी दे सकते है, जिससे मानव जीवन को अनेक प्रकार के खतरों का समाना भी करना पड़ सकता है। अतः मानव को जीवन में कम से कम खतरा हो, इसके लिये मानव को ज्ञान के सही साधनों का, सही ज्ञान होना अति आवश्यक है। इस प्रकार हम कह सकते है कि ज्ञानमीमांसा के अध्ययन से मानव अपने जीवन में यथार्थ(प्रत्यक्ष,अनुमान,उपमान,शब्द द्वारा प्राप्त ज्ञान) एवं अयथार्थ(विपर्यय अथवा मिथ्या, संशय, भ्रम की स्थिति में ज्ञान) ज्ञान का भेद सीख पाता है और अपने सामान्य जीवन में सही एवं गलत ज्ञान का वास्तविक भेद कर पाता है। ज्ञान के सही निर्णय पर पहुँचने के लिये ज्ञानमीमांसा का सही एवं वास्तविक ज्ञान होना अतिआवश्यक है और ऐसा ज्ञान केवल और केवल दर्शनशास्त्र की शाखा ज्ञानमीमांसा के अध्ययन से ही प्राप्त हो सकता है। अतः अध्ययन एवं अनुसंधान की दृष्टि से हमें ज्ञानमीमांसा का अध्ययन अवश्य करना चाहिये।

आचारमीमांसा

आचारमीमांसा की बात की जाये तो यह दर्शनशास्त्र की एक ऐसी शाखा है, जिसको सम्पूर्ण सृष्टि का आधार माना गया है। वेदों में इसे ही ऋत् कहकर सम्बोधित किया गया है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व की प्राकृतिक एवं नैतिक व्यवस्था। अतः सम्पूर्ण सृष्टि की नैतिक व्यवस्था का नाम ही ऋत् है। आचारमीमांसा इसी नैतिक व्यवस्था का अध्ययन एवं अनुसंधान करती है। सृष्टि हो या मानव उसके उचित संतुलन के लिये नैतिक नियमों का होना अति आवश्यक है। ये नैतिक नियम ही मानव एवं सृष्टि को उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ाते है। आचारमीमांसा के अन्तर्गत हम नैतिक मूल्य, नैतिक प्रत्यय, नैतिक मानदण्ड, नैतिक नियम एवं इनसे सम्बन्धित धर्म, समाज एवं राज्य की कानून व्यवस्था आदि का अध्ययन करते है। आचारमीमांसा के अध्ययन से हमें उन जीवन मूल्यों, नैतिक नियमों, नैतिक प्रत्ययों की जानकारी मिलती है, जिनके बिना जीवन एवं जगत् में सन्तुलन, शान्ति एवं स्थिरता नहीं आ सकती। आचारशास्त्र मनुष्य के प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष व्यवहार का अध्ययन करता है और व्यवहार के सभी नियमों की स्थापना ही नहीं करता अपितु व्यवहार से सम्बन्धित नैतिक नियमों के मानदण्ड़ भी बताता है। शुभ–अशुभ, उचित–अनुचित, पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म, अच्छा–बुरा का ज्ञान वैसे तो सामान्य रूप से सभी जानते है, परन्तु इन नैतिक प्रत्ययों का वास्तविक अर्थ एवं नियम हमें आचारमीमांसा के अध्ययन से ही प्राप्त होता है कि किन–किन परिस्थिति में ये नैतिक प्रत्यय ठीक है या गलत है। ऐसे नैतिक प्रत्ययों के वास्तविक अर्थ को जानने के लिये ही हमें आचारशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है और वर्तमान तकनीक एवं वैज्ञानिकता और पूँजीवादी सोच के कारण मनुष्य इतना भटक चुका है कि उसको अपने अधिकतम लाभ के अलावा और कुछ नहीं दिखाई देता। आज का मानव अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये किसी भी हद तक गलत कार्य करने को तैयार रहता, जिसके विभिन्न रूप हमें वर्तमान समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार के विभिन्न प्रकारों में मिलते है। भ्रष्टचार के इन विभिन्न रूपों अर्थात् सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि के कारण आज की मानव सभ्यता इतनी बुरी तरह से त्रस्त है कि मानव इस धरती पर ही नरक जैसे लोक में रह रहा है। अतः इस युग में नैतिक मूल्यों सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, यम–नियम तथा नैतिक प्रत्ययों, नैतिक मानदण्ड़ों जैसे सुखवाद, उपयोगितावाद, आदर्शवाद, आत्मपूर्णतावाद, परार्थवाद, नियतिवाद–अनियतिवाद, सत्याग्रह, कर्त्तव्यशास्त्र आदि के ज्ञान की अति नितांत आवश्यकता है। जिसका ज्ञान केवल और केवल आचारमीमांसा के अध्ययन से ही प्राप्त हो सकता है।

तर्कशास्त्र

तर्कशास्त्र तो न केवल दर्शनशास्त्र की सबसे महत्त्वपूर्ण शाखा है, अपितु समस्त विषयों के अध्ययन एवं अनुसंधान का मुख्य आधार है, क्योंकि तर्कशास्त्र की निगमन एवं आगमन विधि की आवश्यकता सभी विषयों को पड़ती है। तर्कशास्त्र तर्क का शास्त्र अथवा विज्ञान है। तर्कशास्त्र के अध्ययन का मुख्य विषय ज्ञान है और ज्ञान प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दो प्रकार का होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान

हमें हमारी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है, परन्तु अप्रत्यक्ष ज्ञान की प्राप्ति के लिये हमें तर्क की आवश्यकता पड़ती है। जब हम प्रत्यक्ष के आधार पर अप्रत्यक्ष का ज्ञान प्राप्त करते है, तो वह ज्ञान तर्कजनित ज्ञान कहलाता है, जिसके तर्कशास्त्र में मुख्य दो प्रकार आगमनतर्क ज्ञान एवं निगमनतर्क ज्ञान मिलते है। आगमन तर्क एवं निगमन तर्क ज्ञान की दो ऐसी विधियाँ है, जिनके आधार पर ही मनुष्य का सम्पूर्ण सामान्य एवं विशिष्ट जीवन आधारित है और इनके बिना मनुष्य के सुव्यवस्थित जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। आगमन ज्ञान वह ज्ञान है, जिसका निर्माण हमारा मस्तिष्क जगत् की विभिन्न घटनाओं की बार–बार की एक जैसी पुनरावृत्ति को देखकर एक सामान्य धारणा बनाकर करता है और जब अपनी इस सामान्य धारणा के आधार पर वह वस्तु के कार्य एवं क्रिया की घोषणा करता है, तो यह प्रकिया तर्कशास्त्र में निगमन कहलाती अर्थात् आगमन से प्राप्त सामान्या धारणा के आधार पर वस्तु विशेष के कार्य का निर्णय करना। जैसे एक बच्चा जब आग को देखता है, तो वह उसे अपनी ओर आकर्षित करती है और बच्चे को जलती हुई मोमबत्ती बहुँत अच्छी लगती और बच्चा उसे पकड़ने और उससे खेलने के लिये अपने हाथों से आग को पकड़ने का प्रयास करता है, परन्तु जैसे ही वह आग को छूता है तो आग से जलने के कष्ट को अनुभव करता है और बार–बार ऐसा कष्ट अनुभव करने से बच्चा अच्छी तरह से जान जाता है कि आग को छूने अथवा पकड़ने से कष्ट होता है। यहां बच्चे का दिमाग आग के बारे में सामान्य धारणा बना लेता है कि आग जलाने का कष्ट देती है, तो फिर कभी वह आग को छूने अथवा पकड़ने का साहस नहीं कर पाता। बच्चे के दिमाग में यह आग के बारे में जलाने की धारणा बनना ही आगमन ज्ञान है और भविष्य में वह आग को देखकर तुरन्त बिना आग को छुए ही जान जाता है कि आग जलाने का कार्य करती है, आग को देखकर जलाने की शक्ति का ज्ञान प्राप्त करने की प्रकिया का नाम ही निगमन ज्ञान है। इसी प्रकार बच्चे के समान हम जगत् की समस्त वस्तु जगत की कियाओं के बारे में धारणायें बनाकर अपना व्यवहार वस्तु जगत् के साथ निर्धारित करते है और अपना सामान्य जीवन जीते है। वैसे तो जाने अनजाने हम सभी अपना सामान्य जीवन तर्कशास्त्र की आगमन एवं निगमन विधियों के अनुसार ही जीते है, परन्तु अपने जीवन को और अधिक सुव्यवस्थित बनाने के लिये हमें तर्कशास्त्र का अध्ययन अवश्य करना चाहिये। वर्तमान युग में तो यह अति आवश्यक है, क्योंकि प्रत्येक युवक को अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी के लिये एक लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार को अनिवार्य रूप से पास करना होता है और प्रत्येक प्रतियोगी परीक्षा में सबसे कठिन Reasoning का भाग होता है और प्रत्येक प्रतियोगी को प्रतियोगी परीक्षा का यह भाग सबसे अधिक परेशान करता है। इसका सबसे बड़ा कारण यह कि सभी प्रतियोगी इस तर्कशक्ति परीक्षण के भाग की तैयारी करते समय मूल तर्कशास्त्र का अध्ययन नहीं करते है, क्योंकि मूल तर्कशास्त्र एवं इसकी विधियों का अध्ययन तो केवल दर्शनशास्त्र विषय में ही पढ़या जाता है और तो और देखने में यह आया है कि प्रातियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराने वाले संस्थानों के अध्यापक भी मूल तर्कशास्त्र के ज्ञान से अनभिज्ञ रहते है, ऐसी स्थिति में वे केवल तर्क से सम्बन्धित प्रश्नों एवं उनके उत्तरों का मात्र अभ्यास कराते है, वे यह नहीं बता पाते की कौनसी विधियों के अधार पर अमुक प्रश्न का अमुक उत्तर बनता है। ऐसी स्थिति में यह अति आवश्यक है कि मूल तर्कशास्त्र को सभी विषयों के साथ अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाना चाहिये, ताकि विद्यार्थी अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद नौकर हेतु प्रतियोगी परीक्षा को भी आसानी से पास करले।

धर्मदर्शन

दर्शनशास्त्र की शाखा धर्मदर्शन में हम धर्म से जुड़ी हुई सभी बातों की निष्पक्ष रूप से मीमांसा करते है और धर्मदर्शन हमें विभिन्न प्रकार के अन्धविश्वासें एवं रूढ़ीयों से मुक्त रखने का प्रयास करता है। धर्म मनुष्य के जीवन का एक ऐसा अनिवार्य एवं महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसके बिना मानव अपने किसी भी प्रकार के व्यावहारिक जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता है, क्योंकि मनुष्य चाहे जितना आधुनिक एवं वैज्ञानिक हो जाये, परन्तु उसका पारिवारिक एवं व्यवहारिक जीवन का 70 प्रतिशत भाग केवल और केवल धर्म के अनुसार ही चलता है और यह धार्मिक जीवन मनुष्य के जन्म लेते ही प्रारम्भ हो जाता है। पाश्चात्य दर्शन में यदि धर्म की बात की जाये तो वहां धर्म को Religion कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि धर्म वह है जो समाज को आपस में बांध कर रखता है, जोड़कर रखता है। भारतीय दर्शन में धर्म को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है, जिसमें धर्म को समाज को जोड़ने वाले तत्त्व के साथ ही धर्म को विभिन्न प्रकार के कर्त्तव्यों के रूप में लिया गया है और यहि कारण है कि भारतीय मनुष्य का 70 प्रतिशत जीवन केवल धर्म से ही चलता है। धर्म हमें जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक के संस्कारों का ज्ञान कराता है और जीवन के सभी कर्त्तव्यों की शिक्षा देता है। बाबा साहेब डॉ0 अम्बेड़कर जैसे विद्वान का मानना है कि धर्म किसी भी समाज के लिये अति आवश्यक है, क्योंकि धर्म समाज को एक सूत्र में संगठित रखता है और मानव को उसके जीवन के कर्त्तव्यों का वास्तविक ज्ञान कराता है। धर्म ही वह अनिवार्य तत्त्व है, जो हमें जीवन के सभी रीती–रिवाजों एवं परम्पराओं का ज्ञान कराता है। इसलिये हमें अपने धर्म का ज्ञान अवश्य करना चाहिये और साथ ही जीवन को अधिक से अधिक सुव्यवस्थित बनाने के लिये अन्य धर्मों के धार्मिक ग्रन्थों का ज्ञान अवश्य करना चाहियें, क्योंकि धर्म एवं उनके धार्मिक ग्रन्थ हमें जीवन के रहन–सहन एवं व्यवहार की सम्पूर्ण जानकारी देते हैं और धर्म ही मानव जीवन का वह तत्त्व है जो नैतिक मूल्यों का संरक्षण करता है, नैतिक मूल्यों के अनुसार जीवन को ढ़ालने का उपदेश देता है।

समाजदर्शन

दर्शनशास्त्र की सबसे महत्त्वपूर्ण शाखा समाज दर्शन पर जब हम विचार करते है तो पाते है कि समाज दर्शन, दर्शन की वह शाखा है जो मानव को सामाजिक जीवन जीने के मूल्यों एवं आदर्शों की खोज करके उनकी स्थापना करता है। समाज दर्शन दर्शनशास्त्र की एक ऐसी शाखा है जो समाज के साथ ही साथ मनुष्य के जीवन मूल्यो की भी खोज करता है। समाज दर्शन ही हमें बताता

है कि मानव समाज की उत्पत्ति मानव के प्राकृतिक स्वभाव के द्वारा ही होती है और मानव का स्वभाव सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के चार जगत्––जड़ जगत्, वनस्पति जगत्, पशु जगत् और मानव जगत् के क्रमशः स्वभाव से ही बनता है। मानव अपने स्वभाव से सर्वप्रथम अपने जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये ही अपने समाज का निर्माण करता है और मानव जीवन के विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिये वह समाज में विभिन्न संस्थाओं का निर्माण करता है, जैसे विवाह, परिवार, भाषा, धर्म, राजनैतिक, आर्थिक, कला, संस्कृति, विज्ञान, अध्यात्म आदि। इन संस्थाओं के द्वारा ही मानव की संस्कृति एवं सभ्यता आगे बढ़ती है। समाज दर्शन ही मानव जीवन के विभिन्न रीती–रिवाजों एवं परम्पराओं की समीक्षा करके, इनके औचित्य एवं आनौचित्य के मूल्य एवं मानदण्ड निर्धारित करता है और दर्शनशास्त्र की विभिन्न विधियों एवं दार्शनिक दृष्टिकोण का प्रयोग करके मानव समाज के मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना करके, मानव जगत् के लिये उत्तम से उत्तम समाज के निर्माण का प्रयास करता है। समाज दर्शन ही वह मुख्य शाखा है, जो मानव एवं समाज को सन्तुलित एवं संगठित रखने वाले नैतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की समीक्षा करके वर्तमान युग की दृष्टि से इनके पुनर्निर्माण करने का पूरा प्रयास करता है। अतः इस दृष्टि से समाज दर्शन का अध्ययन अति आवश्यक एवं अनिवार्य हो जाता है। इस प्रकार समाज दर्शन के उपरोक्त विवेचन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें एक उत्तम जीवन जीने के लिये और एक उत्तम समाज का निर्माण करने के लिये, समाज दर्शन का अध्ययन अवश्य करना चाहिये, क्योंकि मनुष्य अपने जीवन में चाहे, जितनी ऊँचाईयों को प्राप्त कर ले, परन्तु यदि वह सामाजिक मूल्यों से सुसज्जित नहीं है तो मनुष्य एवं पशुओं में कोई अन्तर नहीं होगा।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते है कि दर्शनशास्त्र एक ऐसा व्यापक एवं सार्वभौम चिन्तन है, जो मानव जीवन के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों को प्रभावित करता है और मानव जीवन को ज्ञान, सत्य तथा सद्गुणों से अभिप्रेरित करता है। दर्शनशास्त्र ही वह विषय है जो जीवन को एक व्यापक तथा सार्थक दृष्टिकोण प्रदान करके उसे अनेक ऐसे मूल्यों से ओत–प्रोत बनाता है, जिनसे मानव को अपने जीवन में आनन्द की अनुभूति होती है, वह ज्ञान प्राप्ति के अनेक अवसर प्रदान करता है। कहा जाता है कि दर्शन विशेष रूप से भारतीय दर्शन भारत के जन–जन में फैला हुआ है और प्रत्येक व्यक्ति स्वयं किसी न किसी दार्शनिक सम्प्रदाय से जुड़ा हुआ होता है तथा पाश्चात्य दर्शन हमें अनुभव, तर्क, विज्ञान एवं गणित की विधियों के आधार पर निश्चित एवं सही ज्ञान प्राप्त करने की पद्धति बताता है। दूसरी ओर मार्क्सवादी दर्शन ने सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक और अस्तित्ववादी दर्शन ने वैयक्तिक जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। इस प्रकार दर्शनशास्त्र का व्यक्ति के दैनिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है। मानव जीवन में जो अनेक निर्णय या विश्वास होते हैं, वे मात्र भूख, प्यास अथवा शारीरिक दशाओं, आदतों तथा बाह्य पर्यावरणीय तत्त्वों से ही प्रेरित नहीं होते हैं, वरन् वे हमारे दार्शनिक दृष्टिकोण से भी प्रेरित होते हैं। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन को आचारमीमांसा के शुभ–अशुभ, उचित–अनुचित, पाप–पुण्य, सम्बन्धी विचार भी हमें प्रभावित करते हैं। इस प्रकार दर्शनशास्त्र का मानव जीवन में अटूट स्थान है। दर्शनशास्त्र सत्य की खोज में निरन्तर प्रयासरत रहता है। अतः उसका प्रभाव व्यक्तियों और समूहों के सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *वेद प्रकाश वर्मा, धर्मदर्शन की मूल समस्याएँ, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्ष–1996*
2. *जॉन हिक, धर्म दर्शन, प्रेंटिस–हाल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, वर्ष–1994*
3. *डॉ0 राज्यश्री अग्रवाल, तर्कशास्त्र का परिचय, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, वर्ष–1988*
4. *डॉ0 हृदय नारायण मिश्र, सामाजिक राजनीतिक दर्शन, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष–2015*
5. *डॉ0 हृदय नारायण मिश्र, पाश्चात्य दर्शन, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष–2012*
6. *डॉ0 बद्रीनाथ सिंह, पाश्चात्य दर्शन की समस्याएँ एवं समकालीन दर्शन, आशा प्रकाशन, वाराणसी, वर्ष–2000*
7. *डॉ0 बद्रीनाथ सिंह, पाश्चात्य दर्शन की रूपरेखा, आशा प्रकाशन, वाराणसी, वर्ष–2016*
8. *डॉ0 उर्मिला चतुर्वेदी, भारतीय चिन्तन की दिशाएँ, कला प्रकाशन, नरिया, वाराणसी, वर्ष–2000*
9. *डॉ0 शिव भानु सिंह, समाज दर्शन का सर्वेक्षण, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, वर्ष–2001*
10. *श्यामकिशोर सेठ नीलिमा मिश्र, तर्कशास्त्र, लोकभारती, इलाहाबाद, वर्ष–2004*
11. *फ्रैंक थिली, पाश्चात्य दर्शन का इतिहास, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिसट्रिब्यूटर्स (प्रा) लिमिटेड, नई दिल्ली, वर्ष–2014*
12. *डॉ0 जगदीशसहाय श्रीवास्तव, समाज दर्शन की भूमिका, विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी, वर्ष–2002*
13. *डॉ0 जगदीशसहाय श्रीवास्तव, पाश्चात्य दर्शन की दार्शनिक प्रवृत्तियाँ, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष–2000*
14. *एस0 एन0 दासगुप्त, भारतीय दर्शन का इतिहास, भाग–1 से 4,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, वर्ष–1988*
15. *संगम लाल पाण्डेय, नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, वर्ष–1989*
16. *जे0 एस0 मेकेन्जी, समाज–दर्शन की रूपरेखा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष–2009*
17. *जॉर्ज टामस व्हाइट पैट्रिक, दर्शनशास्त्र का परिचय, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, वर्ष–1990*
18. *प्रो0 हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोती लाल बनारसीदास, दिल्ली, वर्ष–1999*
19. *डी0 आर0 जाटव, भारतीय दर्शन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, वर्ष–2000*
20. *मृणालकांति गंगोपाध्याय, भारत में दर्शनशास्त्र, राजकमल प्रकाशन, पटना, बिहार, वर्ष–1992*
21. *डॉ0 डी0 आर0 जाटव, प्रमुख पाश्चात्य दार्शनिक, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, वर्ष–2010*
22. *केदारनाथ तिवारी, तर्कशास्त्र का परिचय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, वर्ष–2005*